International Journal of Creative Research Thoughts
Volume 1, Issue.6, June 2013
ISSN:-2320-2882

ORIGINAL ARTICLE

भारतीय ज्ञानपरम्परा में काश्मीर शैवदर्शन की भूमिका

प्रदीप (शोधच्छात्र), विशिष्ट संस्कृत अध्ययन केन्द्र,
जवाहरलाल नेहरु विश्वविद्यालय, नई दिल्ली, भारत

Abstract :-

भारतीय ज्ञानपरम्परा का मूल आधार ग्रन्थ वेद है। वेद भारतीय सामाज की अमुल्य निधि हैं तथा इसे प्राचीन भारत की सभी विद्याओं का और कलाओं का मूल आधार माना जाता है। भारतीय संस्कृति के दर्शन सर्वप्रथम वेदों में परिलक्षित होतें हैं। **जर्मन विद्वान् मैक्समूलर ने स्वयं लिखा है**- "**ऐसा प्राय: निश्चित माना जाता है कि न केवल भारत में वरन् प्राचीन विश्व के इतिहास में वेदों का स्थान अत्यन्त की महत्त्वपूर्ण है।**[1] आचार्य मनु ने भी वेदों की प्रशंसा करते हुए कहा है :- "**सर्वज्ञानमयो हि स:"।**[2] वेद शब्द की निष्पत्ति विद् धातु से '**भाव**' , '**कर्म**' और '**करण**' अर्थ में **घञ् प्रत्यय** करने पर होती है। अत: '**वेद**' शब्द का सामान्य अर्थ- ज्ञान का विषय या ज्ञान का संग्रहग्रन्थ से किया जाता है। वेद को ज्ञान का भण्डार कहा जाना पूर्णत: सार्थक है। महर्षि पतञ्जलि ने महाभाष्य के प्रारम्भ में ब्राह्मण का अनिवार्य कर्त्तव्य बताया है कि निस्वार्थ भाव से वेदाङ्गों के सहित वेदों का अध्ययन करें- **"ब्राह्मणेन निष्कारणो धर्म: षडङ्गो वेदोऽध्येयो ज्ञेयश्च"।**[3] इसी वैदिक ज्ञानपरम्परा से दर्शन का उद्भव और विकास हुआ। इसे भारतीय दर्शन के नाम से जाना जाता है। भारतीय दर्शन की तीन प्रमुख धाराएं है – **वैदिक ,अवैदिक, आगमिक दर्शन ।** वैदिक दर्शन आस्तिक सम्प्रदाय का है तो अवैदिक दर्शन नास्तिक और आगमिक दर्शन की एक कडी में शैवदर्शन का उद्भव और विकास हुआ ,जो वैदिक दर्शन को अपने अन्दर आत्मसात किये हुए है। **शैवागमों को शिव का प्रकाशन कहा गया है ।** इस दर्शन मे सभी सिद्धान्त आगमों पर आधारित हैं। अत: यह शुद्ध आगमिक दर्शन होते हुये भी वैदिक धर्म का पोषक है । काश्मीर शैवदर्शन भारतीय दर्शन में सर्वाधिक प्राचीन दर्शन के रुप में प्रसिद्ध है। **परम शिव को प्राप्त करना ही एवं स्वयं की प्रत्यभिज्ञा कराना ही इस दर्शन का लक्ष्य है ।** माधवाचार्य ने **"सर्वदर्शनसंग्रह"** में इसे **प्रत्यभिज्ञादर्शन** के नाम से अभिहित किया है। भारतीय ज्ञान परम्परा में काश्मीर शैवदर्शन की महत्त्वपूर्ण भूमिका है। परन्तु वर्तमान में इस दर्शन लुप्तप्राय माना जाता है। इस ज्ञानपरम्परा में साधना, भक्ति,मानवीय मूल्य और सृष्टि के रहस्य की विस्तृत जानकारी वर्णित है।

Key Words :- प्रस्तुत शोधपत्र में काश्मीर शैवदर्शन की ज्ञानपरम्परा का परिचय देते हुए इसके सामाजिक, आध्यात्मिक एवं धार्मिक तथा दार्शनिक महत्त्व का संक्षिप्त विवेचन किया जाएगा।

---

[1].मैक्समूलर चिप्स फम.ए,जर्मन वर्कशॉप,पृ०सं०-4

[2].मनुस्मृति-2/7

[3] महाभाष्य-प्रथम आह्निक।

भारतीय ज्ञानपरम्परा का मूल लक्ष्य मोक्ष है। मोक्ष की प्राप्ति हेतु इस ज्ञानपरम्परा में अनेक विधाओं का प्रादुर्भाव हुआ। उनमें शैवदर्शन का अन्यतम स्थान है। इस ज्ञानपम्परा में समानान्तर रूप से दो संस्कृतियाँ विकसित हुई हैं- **वैदिक एवं तान्त्रिक।**[4] इन दोनों संस्कृतियों का एक दुसरे पर पर्याप्त प्रभाव है। परन्तु यह स्पष्ट कर पाना अत्यन्त कठिन है कि किसने किससे क्या लिया है क्योंकि आज पर्याप्त प्रमाणों का अभाव है। भारतीय ज्ञानपरम्परा में बहिरंग साधना का प्रकाशक ग्रन्थ निगम अर्थात् वेद हैं, तथा अन्तरंग साधना का बोधक ग्रन्थ आगम अर्थात् तन्त्र है। अत: भारतीय संस्कृति को **निगमागममूलक** कहा जाता है।[5] अत: सर्वप्रथम इनके स्वरुप को स्पष्ट करना अनिवार्य है।

वैदिक संस्कृति का मूल आधार वेद हैं। वेद को ज्ञान का भण्डार कहा गया है। वेद भारतीय धर्म का मूल हैं- **"वेदोऽखिलो धर्ममूलम्"।**[6] वेद को अनेक नामों से जाना जाता है । जैसे-**श्रुति,निगम,आगम,त्रयी,छन्दस्,स्वाध्याय आदि ।**[7] काश्मीर शैवाचार्य अभिनवगुप्तपादाचार्य ने वेद के निगम पद के अर्थ को स्पष्ट करते हुए कहा है – **धर्म को समझने के लिये हमारे जानने के लायक उपायों की निश्चित् सूचना देने वाला शास्त्र निगम अर्थात् वेद है।**[8]

तान्त्रिक संस्कृति का मूल आधार तन्त्र ग्रन्थ हैं। इनका केन्द्रबिन्दु परमशिव है। अत: इसको शैवदर्शन के नाम से जाना जाता है।

आगम या तन्त्रों के स्रष्टा एवं वक्ता स्वयं शिव हैं।[9] आगम और तन्त्र एक ही ज्ञानविधा के दो नाम हैं। तन्त्र की परिभाषा को स्पष्ट करते हुए कामिका में कहा गया है –

"तनोति विपुलानर्थान्,तन्त्रमन्त्र-समन्वितान्।

त्राणं च कुरुते यस्मात्, तन्त्रमिभिधीयते"॥[10]

---

[4]. काश्मीर शिवाद्वयवाद की मूल अवधारणाएँ – अध्याय – 1, पृष्ठ संख्या - 1

[5]. काश्मीर इतिहास एवं संस्कृति - पृष्ठ संख्या ,178

[6]. मनुस्मृति , द्वितीय अध्याय , श्लोक - 2

[7]. वैदिक साहित्य एवं संस्कृति – पृष्ठ संख्या - 2

[8]. ईश्वरप्रत्यभिज्ञाविवृतिविमर्शिनी, भाग – 1, पृष्ठ संख्या - 25

[9]. विज्ञानभैरवविवृति, पृष्ठ संख्या - 7

[10].कामिकागम में उदृत ।

अर्थात् तन्त्र विपुल अर्थों के साथ तद् अनुसारी आचारणशील व्यक्तियो का त्राण करता है उसे तन्त्र कहते हैं। समस्त शैवदर्शन का मूल आधार तन्त्र या आगम ग्रन्थ हैं। शैवागमों में इनका उल्लेख वर्णित है कि इनका ज्ञान शिष्य प्रशिष्य परम्परा के द्वारा समस्त जगत् में व्याप्त हो गया। आचार्य सोमानन्द ने भी **"शिवदृष्टि"** में इनका स्पष्ट उल्लेख किया है –

"स्थिता शिष्यप्रशिष्याद्यैर्विस्तीर्ण मठिकोदिता।

तदेवमेतद् विहितं मया प्रकरणं मनाक्"॥[11]

समय के अनुसार शैवदर्शन का प्रचार प्रसार होता गया और यह विभिन्न सम्प्रदायों में विभाजित हो गया। इस रहस्य को समझना अत्यन्त कठिन है। पुराणों में शैवधर्म के **पाशुपत, शैव, कालामुख और कापालिक चार सम्प्रदायों** का वर्णन किया गया है। यद्यपि प्रमाणिक बिन्दुओं और भौगोलिक आधार पर इस तथ्य को आत्मसात् किया जा सकता है। इनमें शैवदर्शन के मुख्यत: चार सम्प्रदाय बहुप्रचलित हैं। **जिनमें पाशुपत शैव, दक्षिण शैव, वीर शैव एवं काश्मीर शैवदर्शन** का विशेषत: परिगणन किया जाता है।[12]

काश्मीर शैवदर्शन को **अद्वैत शैवदर्शन,त्रिक दर्शन,प्रत्यभिज्ञादर्शन एवं शिवाद्वयवाद दर्शन** आदि अनेक नामों से जाना जाता है। भारतीय ज्ञान परम्परा के परिपेक्ष्य में काश्मीर शैवदर्शन अपनी महत्ता को सर्वत्र प्रसारित करता है। वर्तमान समाज के गिरते हुए आध्यात्मिक एवं सामाजिक चिन्तन में यह दर्शन महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाता है। काश्मीर शैवदर्शन में परमशिव केन्द्रबिन्दु है।

समस्त सृष्टि का मूल कारण परमशिव है- **"शिव: परम कारणम्"** ।[13] यह पञ्चनृत्यकारी शिव अपनी लीला से सारी सृष्टि का सृजन करता है। इस दर्शन में शिव ही एकमात्र परमतत्त्व है।इससे भिन्न जो भी कुछ इस संसार में देखने को मिलता है वह उसकी अभिवयक्ति है। **वह परमशिव काल, स्थान और कारणता की सीमाओं से परे है।**[14] शिव आत्मरुप होते हुए भी परमसत्ता है। वह निरपेक्ष और सभी बन्धनों से स्वतन्त्र सत्ता है।[15] वह शिव चेतना का अवभासात्मक प्रकाश है। चेतना जहाँ भी रहती है। वहाँ वह प्रकाशित होती रहती है। प्रकाश का स्वभाव विमर्श होता

[11].शिवदृष्टि – 7/122

[12].काश्मीर इतिहास एवं संस्कृति , पृष्ठ संख्या - 180

[13] . तन्त्रालोक , 1/88

[14]. त्रिपुररहस्यक, पृष्ठ संख्या – 7/8

[15] .तन्त्रालोक – 1/59

है। यह स्वेच्छा से जगत् की रचना करता है- "**स्वेच्छया स्वभित्तौ विश्वमुन्मीलयति"।**[16] शिव के पञ्चकृत्यों के कारण सृष्टि का प्रादुर्भाव होता है। इनका संक्षिप्त वर्णन इस प्रकार है-

1.**सृष्टि:-** परमशिव के द्वारा स्व- अभिव्यक्ति का सृष्टि रूप में सृजन करना।

2.**स्थिति: -** परम के द्वारा जगत् का ठहराव और नियमपूर्वक उसका पालन करना ।

3.**संहार :-** परमशिव के द्वारा जगत् को समेट लेना या बटोर लेना ।

4.**तिरोधान** :- परमशिव के द्वारा स्व-वास्तविक स्वरुप का आवरण या गोपन कर लेना।

5.**अनुग्रह** :- परमशिव के द्वारा अपने स्वरुप का प्रकाश शक्ति के माध्यम से शिष्य पर डालना ।

यह शिव शक्ति के द्वारा अपने कार्य सम्पूर्ण करता है। शिव और शक्ति अभेद हैं। यह शिव का अभिन्न रूप है। आचार्य सोमानन्द ने भी स्पष्ट कहा है- **"शक्ति शक्तिमतोर्भेद शैव जातु न विद्यते"।**[17] यह शक्ति पञ्चविध रूपों में शिव से संयुक्त रहती है। जैसे -

1.**चित् शक्ति :-** इससे परमशिव प्रकाश्य वस्तुओं के अभाव में भी स्वयं प्रकाशित होते रहते हैं।

2.**इच्छाशक्ति :-** परमशिव अपने को स्वतन्त्र और अप्रतिहत इच्छा से सम्पन्न अनुभव करते हैं।

3.**आनन्द शक्ति** :- इससे वस्तुओं के उपयोग के बिना ही परमेश्वर आनन्द में मग्न रहते हैं।

4.**ज्ञान शक्ति** :- इसके कारण शिव स्वयं ज्ञानरुप है तथा सभी पदार्थों का पूर्ण ज्ञान रखते हैं।

5.**क्रिया शक्ति** :- इस शक्ति के द्वारा शिव स्वयं को सभी रुपों में धारण करने में स्वतन्त्र है।

भारतीय समाज में शक्ति को अनेक रूपों की आराधाना की जाती है। ज्ञानपरम्परा के दोनों तत्त्वों का विशेष महत्व है। इसके अतिरिक्त आध्यात्म के संदर्भ में काश्मीर शैवदर्शन की साधना मानव के लिये विशेष मार्ग प्रशस्त करती है। वर्तामान समाज में आध्यात्म का अभाव है। चारों तरफ भिन्न-भिन्न सम्प्रदायों का बोलबाला परिलक्षित होता है। अत: शैवदर्शन दिन-

[16]. प्रत्यभिज्ञाहृदयम्, सूत्र-2

[17].शिवदृष्टि-3/3

प्रतिदिन लुप्त होता जा रहा है। तथापि भारतीय ज्ञान संस्कृति पर इसकी गहरी छाप है। भारतदेश में बहुचर्चित **द्वादश ज्योतिर्लिङ्ग** [18] इस बात का प्रमाण है। इसमें शिव की आराधना और पूजा-पद्धति का विशेष स्थान है। काश्मीर शैवदर्शन के अनुसार जीव **माया के पाँच कञ्चुकों** से आवृत होकर स्वयं को भूल जाता है। अत: उसको स्वयं की प्रतभिज्ञा करनी पडती है। इसके बिना उसका मुक्त होना असम्भव है। इन पाँच कञ्चुकों का वर्णन इस प्रकार है -

1.**कला :-** इसमें के द्वारा कर्तृत्व का संकोच होता है।शिव का स्वातान्त्र्य सीमित हो जाता है। उसके **सर्वकर्तृत्व के स्थान पर किञ्चित् कर्तृत्व** आ जाता है।अत: इसे **किञ्चित्कर्तृत्वोद्बलनमयी** कहा गया है।[19]

2.**विद्या** :- इसमें ईश्वर का सर्वज्ञत्व सिमटकर किञ्चिज्ञत्व में आ जाता है। जीव में कुछ वेद्यों का ज्ञान उत्पन्न होने के कारण इसे **किंचिज्ज्ञत्वोन्मीनरूपा** कहा गया है।[20]

3.**राग :-** राग तत्त्व कञ्चुक पूर्णतृप्ति से यत्किञ्चित् भोगों आ जाता है। किसी भी वस्तु मम् समझकर उसे गुणशालिनी मानने लगता है। अत: इस **गुणारोपणनय शक्ति** को ही राग कहा गया है।[21]

4.**काल** :- जिसके द्वारा परमेश्वर नियत्व संकुचित् होकर अतीत ,वर्तमान और अनागत में परिच्छिन्न हो जाता है उसे काल कहते हैं।

5.**नियति :-** इसमें परमेश्वर का स्वातान्त्र्य संकुचित होकर विशिष्ट कार्य के लिये विशिष्ट कारण का नियम धारण करता है। **नियम की नियामिका** होने के कारण यह नियति कहलाती है।[22]

इनके प्रभाव से जीव अपने वास्तविक स्वरूप को भूल जाता है। अत: संसार के बन्धन में बंध जाता है।

---

[18]. En.wikipedia.org /wiki/jyotirlinga

[19] .ईश्वरप्रतभिज्ञाविमर्शिनी, भाग -2, पृष्ठ संख्या- 208

[20].ईश्वरप्रत्यभिज्ञाविमर्शिनी, भाग-2, पृष्ठ संख्या - 208

[21] ईश्वरप्रत्यभिज्ञाविमर्शिनी, भाग-2, पृष्ठ संख्या -209

[22].मालिनीविजयोत्तरतन्त्रम्, 1/29

काश्मीर शैवदर्शन में विषयों की ऐसी ज्ञानपरक गंगा है, जिसमें अनेक ज्ञानबिन्दु आलोडन करते रहते हैं। इसकी तत्त्वमीमांसा सर्वाधिक प्रबल मानी है। जिसमें शिव से लेकर पृथ्वी पर्यन्त छत्तीस तत्त्वों का परिगणन किया जाता है। इसकी ज्ञानगंगा में **त्रिविध मल, उपाय, भक्तिमार्ग, जपविधान, दीक्षा पद्धति**, **शक्तिपात**,**सप्तविध प्रमाता**, **शैवीसाधना** आदि अनेक विषयों का वर्णन है। जिनको यहाँ स्पष्ट करना असम्भव है। अत: लेखनी को विराम देना आवश्यक है।

उपसंहार :- भारतीय दर्शन विद्या के सभी रहस्यों का स्पष्टीकरण काश्मीर शैवदर्शन में वर्णित है। इसकी अद्वैत आधात्मिक दृष्टि मानव के सभी समस्याओं का समाधान करती है । वर्तमान समय में काश्मीर शैवदर्शन का उच्छेद् सा हो गया है। अन्य शास्त्रों की अपेक्षा इसके मर्मज्ञ विद्वानों को उंगलियों पर गिना जा सकता है।तथापि **नवजीवन रस्तोगी**[23] **एवं मार्क डिच्काऊस्की** [24] जैसे शिव अनुरागियों ने इसके वर्चस्व को बढाने में अपना सारा जीवन समर्पित कर किया है। इसके अध्ययन के लिये कोई भी जाति, वर्ण या लिंग आदि का विचार नही किया जाता है। कोई भी शिवज्ञान पिपासु इसके अध्ययन में संलग्न हो सकता है। इसका प्रचार और प्रसार स्वयं शिव के हाथ में है। अन्त में यजुर्वेदीय मन्त्र से परमशिव को का नमन करता हूँ - **"ॐ नम: शम्भवाय च मयोभवाय च नम: शङ्कराय च**

मयस्कराय च नम: शिवाय च शिवतराय च"॥[25]

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. काश्मीर शैवदर्शन : बी.एन.पण्डित, रा.स.संस्थान, रणवीर परिसर,जम्मू-2005

2. काश्मीर शिवाद्वयवाद की मूल अवधारणाएँ : नवजीवन रस्तोगी , मुंशीराम मनोहरलाल पब्लिशर्स, नई दिल्ली- 2002

3. काश्मीर इतिहास एवं संस्कृति : कुसुम भुरिया दत्ता , प्रतिभा प्रकाशन, दिल्ली ।

[23] . लखनऊ विश्वविधालय , संस्कृत विभाग , भूतपूर्व प्रोफेसर, काश्मीर शैवदर्शन ।

[24]. इंलैण्ड के संस्कृत प्रोफेसर, वर्तमान में बनारस (काशी के नारद घाट पर) काश्मीर शैव साधना में अध्ययनरत् ।

[25]. शुक्लयजुर्वेद – 16/14

4. श्री तन्त्रालोक : श्रीमदभिनवगुप्त, सं०- परमहंस मिश्र (हंस),सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय,वाराणसी-2000

5. प्रत्यभिज्ञाहृदयम् : क्षेमराज,शिवशंकर अवस्थी,शास्त्री, (व्याख्याकार एवं सम्पादक), वाराणसी , चौखम्बा संस्कृत सीरिज आफिस, 1970

6. ईश्वरप्रत्यभिज्ञाविमर्शिनी : अभिनवगुप्त, (भास्करी सहित) ,के.ए.एस.अय्यर तथा के.सी.पाण्डे (संपादक),दिल्ली, मोतीलाल बनारसीदास, 1986

॥इति॥